RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पानीपत की प्रथम लड़ाई का ऐतिहासिक महत्व

Sonu Kumari

Extension Lecturer (History), Government College Bond Kalan, Charkhi Dadri (India)

पानीपत का स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से न केवल हरियाणा के लिए बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी उल्लेखनीय स्थान रखता है। इतिहास के पटल पर पानीपत की तीनों लड़ाईयों ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। पत्येक लड़ाई के अतं में एक नए युग का सूत्रपात हुआ है। पानीपत की प्रत्येक लड़ाई हमें जहां भारतीय वीरों के शौर्य, स्वाभिमान एवं संघर्ष से परिस्थित कराती है।

वहीं आपसी फूट स्वार्थता और अदूरदर्शिता जैसी भारी भूलों के प्रति निरन्तर सचेत करती है। पानीपत की पहली लड़ाई के उपरांत लोधी वंश के अंत और मुगल साम्राज्य की नीव की कहानी लिखी गई। पानीपत की पहली लड़ाई 24 अप्रैल 4526 को पानीपत के मैदान में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोधी और मुगल शासक बाबर के बीच हुई। इब्राहिम लोधी अपने पिता सिकन्दर लोधी की नवम्बर 4547 में मृत्यु के उपरांत दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान हुआ इस दौरान देश अस्थिरता एवं अराजकता के दौर से गुजर रहा था। यहां कई छोटे बड़े राज्य थे जो आपस में लड़ते रहते थे। इन राज्यों में सर्वाधिक विस्तृत तथा शक्तिशाली दिल्ली का राज्य था जिसमें

हरियाण प्रदेश भी सम्मिलित था.। इस राज्य का स्वामी इब्राहिम लोधी था यों तो इस सुल्तान के पास काफी बड़ी सेना थी पर वह ठीक प्रकार से न तो अनुशासित थी ओर न ही अस्त्र–शस्त्रों से लैस थी। लोधी स्वयं अनुभवहीन नवयुवक था उसका स्वभाव क्रूर तथा संदेहात्मक था कई अमीरों ने तो उससे तंग आकर विद्रोह तक कर दिया था। भारत भी अस्थिर, निर्बल राजनीति और राजनीतिक विभाजन ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए उत्साहित किया। इसी समय पंजाब के सुबेदार दौलत खाँ लोधी और सुल्तान इब्राहिम लोधी के चाचा आलम खाँ लोधी ने बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए आमन्त्रित किया। बाबर ने 5 जनंवरी 4526 को अपनी सेना सहित दिल्ली पर धावा बोलने के लिए अपने कदम आगे बढ़ा दिए इसकी सूचना मिलने पर इब्राहिम लोधी ने बाबर को रोकने के लिए हिसार के फौजदार हमीद खाँ को सेना सहित मैदान में भेजा। हमीद खाँ की सेना बड़ी ही भंयकर आफत मानी जाती थी उसमें अधिकांश हरियाणवी सैनिक थे। बाबर ने हमीद खाँ का मुकाबला करने के लिए अपने पुत्र हुमांयु को भेज दिया। हुमायुं ने अपनी सूझ बूझ और तांकत के बल पर 25 फरवरी 4526 को अंबाला में हमीद खाँ को पराजि कर दिया और मुगलों का हिसार पर कब्जा हो गया। इस जीत से उत्साहित होकर बाबर ने अपना सैन्य पड़ाव अंबाला के निकट शाहाबाद मारकंड़ा में डाल दिया जहां उसने कुछ विश्राम किया यमुना नदी के तट के साथ–साथ चलता हुआ वह घरोंड़ा पहुंचा जहां सराय में उसने कुछ दिन विश्राम किया ।

पानीपत का चुनाव

बाबर कों इब्राहिम की सेनाओं से टक्कर के लिए पानीपत का मैदान बड़ा उपयुक्त लगा। इसका चुनाव सोच–समझ कर किया क्योंकि पानीपत का क्षेत्र समतल था एवं एक तरफ यमुना नदी थी इस तरफ से आक्रमण की चिन्ता से मुक्त था। डा0 के सी यादव के अनुसार उसके पडाव के दाहिनी ओर पानीपत का नगर था। पानीपत पहुँचकर उसने 42 अप्रैल 4526 ई0 को अपने मोर्चे बनाने आरंभ कर दिए, दोनों सेनाएं एक सप्ताह तक एक दूसरे पर हमला किए बिना खड़ी रही किंतु किसी ने भी एक दूसरे पर धावा बोलने की हिम्मत नहीं कि अंत में 24 अप्रैल 526 को बाबर ने अपने सैनिकों को शत्रु के विरूध लड़ने का आदेश दिया।

सैन्य बल के मामले में सुल्तान इब्राहिम लोधी का पलड़ा भारी था जिसकी संख्या 4 लाख से अधिक थी। इस विषय में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। सामान्यत इस सेना का अनुपात 400000:42000 बताया जाता है। सर जदुनाथ सरकार ने स्पष्ट करते हुए कहां है कि इब्राहिम लोधी के सेना में सेवकों एवं ऐसे लोगों की संख्या अधिक थी जिनका युद्ध से कोई सम्बन्ध नहीं उसकी सेना में 20000 घुड़सवार, 30000 सैनिक पैदल थे एवं हाथी सेना की संख्या भी पर्याप्त थी। अबुल फजल के अनुसार बाबर की सेना में 42000 सैनिक थे। रशब्रुक विलियम ने सेना की संख्या 8000 मानी है। 24 अप्रैल 526 के इस निर्णायक युद्ध के सम्बन्ध में बाबर ने अपनी आत्मकथा ने लिखा है कि उसने 42000 सैनिकों की सहायता से इब्राहिम लोधी को पराजित किया।

बाबर की सैन्य रणनीति

बाबर के 2000 सैनिक थे जो तकनीकी दृष्टि से. काफी श्रेष्ठ और तोपों व बंदूकों से लैस थे। तोपें गाडियों में रखकर युद्ध स्थल पर लाकर प्रयोग की जाती थी। सभी सैनिक पूर्ण

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रूप से कवच युक्त एवं धनुष बाण विधा में एकदम निपुण थेद्य बाबर के पड़ाव के दाहिनी और पानीपत नगर था और बाई ओर सुरक्षित करने के लिए खाईयां खुदवा कर उनमें वृक्ष कटवा कर गिरवा दिए। मध्य में 700 छकड़े खड़े करवाकर उन्हें परस्पर गीले चमड़े की रस्यों से बंधवा दिया। इनको जरूरत के समय आगे पीछे किया जा सकता था। ताकि शत्रु सेना के वेग को कम किया जा सके। बाबर ने तोपखाने का प्रयोग कुशलता से किया इसका नेतृत्व उस्ताद अली एवं मुस्तफा नामक दो तोपचियों को सौंपा गया। सेना को तीन भागों में बांटा गया जिसके मध्य भाग का नेतृत्व स्वयं बाबर कर रहा था। सेना के घुड़सवार सैनिकों का नेतृत्व अबदुल अजीज रहा था।

इब्राहिम लोधी की सैन्य रणनीति

जबकि इब्राहिम लोधी बाबर की रणनीति से अनभीज्ञ था। इब्राहिम लोधी ने सेना की सुरक्षा के लिए कुछ नहीं किया। उसके युद्ध करने का ढ़ंग पिछड़ा व परम्परागत था लोधी कें पास तोपखाने का अभाव था एवं सेना के प्रमुख हथियार तलवार, भाला, लाठी, कुल्हाड़ी व धनुष बाण थे। उसकी सेना उद्देश्यविहिन व नेतृत्वविष्ठेन थी। उसकी अग्रिम सेना की सुरक्षा के लिए भारी भरकम हाथी लगा रखे थे। बाबर के तोपचियों ने जैसे ही गोलों की बौछार की इब्राहिम लोधी के हाथी भयभीत होकर उसकी स्वयं की सेना को ही कुचलना शुरू कर दिया। बाबर के

सैनिकों ने मध्य एशिया के चतगाई–उजबेग युद्ध तकनीक तुलुगमा युद्ध प्रणाली का प्रयोग करते हुए शत्रु सैनिकों को पीछे एवं दाए व बाए से घेर लिया। इस प्रकार भारी–भरकम सेना में खलबली मच गई। इब्राहिम लोधी लड़ते हुए 45000 सैनिकों के साथ वीरगती को प्राप्त हुआ।

इस युद्ध के बाद बाबर कोई सात दिन तक पानीपत में ठहरा रहा। समस्त घन संपति, हाथी एवं अस्त्र–शस्त्र पर उसने अधिकार कर लिया और युद्ध में अपनी सहायता करने वाले सुल्तान मुहम्मद उगली को पानीपत का हाकिम नियुक्त किया। इसके साथ–2, जहां इब्राहिम लोघी का शव मिला था उस स्थान पर उसकी याद में कब्र भी बनवा दी।

इस युद्ध से भारतीय इतिहास में एक नए युग का आरंभ हुआ। लोधघी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना हुई। इस नए वंश ने आगे आने वाले समय में कई प्रतिभाशाली व महान शासकों को जन्म दिया। जिनका प्रभाव उस दौर के भारतीय समाज पर सामाजिक व सांस्कृतिक रूप में देखा जा सकता है।

पानीपत की लड़ाई में बाबर की जीत का ऐतिहासिक महत्व

भारत में बाबर का आगमन अनेक पहलू से महत्वपूर्ण था। कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद काबुल और कंधार पहली बार उत्तर भारत पर आधारित एक साम्राज्य के अभिन्न अंग बने। ये क्षेत्र भारत पर आक्रमण के लिए हमेशा एक तैयारी के अभिन्न अंग बने।द्य ये क्षेत्र भारत पर आक्रमण के लिए हमेशा एक तैयारी के मैदान जैसा काम करते आऐ थे। इसलिए उन पर अधिकार जमाकर बाबर और उसके उत्तराधिकारियों ने लगभग 200 वर्षों तक भारत को बाहरी हमलों से सुरक्षित रखा।

पानीपत की लड़ाई में बाबर की जीत का आर्थिक महत्व

आर्थिक दृष्टि से भी, काबुल और कंधार के नियंत्रण ने भारत के विदेशी व्यापार को बल पहुँचाया क्योंकि ये दो नगर पूर्व में चीन और पश्चिम में भूमध्यसागरीय बंदरगाहों तक जानेवाले काफिलों के प्रस्थानबिन्दु होते थे। इस तरह एशिया पार के विशाल व्यापार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ी।

पानीपत की लड़ाई में बाबर की जीत का कूटनीतिक महत्व

मध्य और पश्चिमी एशिया की राजनीतिक स्थिति कुल मिलाकर शांति और स्थायित्व की स्थिति थी, हालाँकि युद्ध और खूनखराबे होते रहते थे। इस स्थिति में मध्य एशिया के मामलों में एकजुट भारत का आर्थिक और कूटनीतिक हस्तक्षेप लाजमी तौर पर पहले से बढ़ा। बाबर और उत्तराधिकारियों की हार्दिक इच्छा अपने वतन फरगाना को फिर से पाने की थी। इसके कारण भी भारत मध्य एशिया के विकासक्रमों पर गहरी नजर रखता रहा। इस प्रकार हम कह सकते हैं मुगल वंश की स्थापना से भारत के इतिहास पर दूरगामी व स्थाई प्रभाव पड़े।

संदर्भ–सूचि

1. डा0 के.सी. यादव, हरियाणा का इतिहास : आदि काल से 4966 तक, होप इंडिया
2. पब्लिकेशन, सैक्टर–23, गुरूग्राम
3. डा0 ओंकार नाथ द्विवेदी, मध्यकालीन भारत का इतिहासः 4526ई0 से 4784ई0, लक्ष्मी
4. प्रकाशन, जी0––30, गली नं. 4, गंगा विहार दिल्ली–94 (2046)
5. डा0 यशवीर सिंह 'राजगुरू', डा0 हवा सिंह, आधुनकि विश्व, लक्ष्मी पब्लिकेशन, भिवानी
6. जितेन्द्र अटेला, हरियाणा का इतिहास, लक्ष्मी पब्लिकेशन, भिवानी
7. अमर सिंह, मध्यकालीन भारत का इतिहास, अवंतिका पब्लिकेशन, 2045
8. शैलेन्द्र सेंगर, मध्यकालीन भारत का इतिहास, एटलांटिक पब्लिकेशन, 2005

RRIJM 2015, All Rights Reserved